Chapter-1

6-4-2022

[भाषा अधिगम एवं अर्जन]

- भाषा→ भाषा शब्द की उत्पत्ति 'भाष' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है – कहना, बोलना, उच्चारण करना।
- भाषा मुख से निकलने वाले सार्थक शब्दों का एक समूह है जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- इस प्रकार भाषा के दो रूप हैं→
  1) मौखिक भाषा 2) लिखित भाषा
  अन्य → (3) सांकेतिक भाषा

* भाषा अर्जन एवं अधिगम : →

- भाषा एक अर्जित संपत्ति है पैतृक नहीं है।
- बच्चा तीन प्रकार से भाषा अर्जित करता है :→
  (1) अनुकरण से (पीछे-पीछे बोलना)
  (2) अभ्यास से (दोबारा दोहराना)
  (3) पुनरावृत्ति से (बार-बार दोहराना)

* भाषा अधिगम के महत्वपूर्ण बिन्दु : →

- भाषा एक नियमबद्ध व्यवस्था है।
- भाषा निरंतर परिवर्तनशील है।
- भाषा का प्रभाव जटिल से सरल की ओर होता है।
- भाषा सर्वव्यापक सभी जगह है।
- संयुक्त परिवार में बच्चे का भाषा विकास अच्छा होता है।
- भाषा को सीखने के लिए संबंध भाषा का वातावरण होना आवश्यक है।
- भाषा अध्ययन में मुख्य तत्व उच्चारण की स्पष्टता है।
- भाषा की कक्षा में यह महत्वपूर्ण है कि भाषा के प्रश्न भूमि पर किसी को पीछे न छोड़ा जाए।
- भाषा के विविध प्रयोग से ही भाषा की विविध कुशलता आती है।

Pradeep
PAGE NO.
DATE : / /

भाषा सीखने में जो त्रुटियां होती हैं वह सीखने की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा होती हैं जो समय के साथ दूर होने लगती हैं।

- बच्चे विद्यालय की शुरुआत से पहले ही भाषा की जटिलताएं जैसे नियम की आत्मसात, का पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं।

* बालकों की आयु	बालकों का शब्द भण्डार
जन्म से 8 माह तक	0
9 माह से 12 माह तक	तीन से चार शब्द
डेढ़ वर्ष तक	10 या 12 शब्द
2 वर्ष तक	272 शब्द
ढाई वर्ष तक	450 शब्द
3 वर्ष तक	1000 शब्द
साढ़े 3 वर्ष तक	1250 शब्द
4 वर्ष तक	1600 शब्द
5 वर्ष तक	2100 शब्द
11 वर्ष तक	50000 शब्द
14 वर्ष तक	80000 शब्द
16 वर्ष से आगे	1 लाख से अधिक शब्द

6-4-2022

Chapter-2

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त

- शिक्षण सामग्री का प्रयोग - उपयोग करने के लिए कुछ शिक्षण सूत्र-सिद्धान्त आदि का पालन करना पड़ता है। ये सूत्र, सिद्धान्त उसके शिक्षण की खाद होते हैं इसी के बल पर वह अपने शिक्षण को समृद्ध बनाता है।
जो कि निम्नलिखित हैं।→

1) नियोजन का सिद्धान्त !→ यह एक प्रकार से पूर्व पाठिका है। जैसे कार्य हैं कक्षा में जाने से पूर्व पाठ की तैयारी।

2) शिक्षण सूत्र के क्रियान्वन का सिद्धान्त !→ शिक्षक का इसका कार्य है कि व शिक्षण सूत्र के क्रियान्वन के सिद्धान्त को अपनाएं।

* शिक्षण के सूत्र !→ (नियम)
- सरल से कठिन की ओर
- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- मूर्त से अमूर्त की ओर
- विशिष्ट से सामान्य की ओर
- अनिश्चित से निश्चित की ओर
- पूर्ण से अंश की ओर
- आगमन से निगमन की ओर। (उदाहरण से नियम की ओर)
- विश्लेषण से संश्लेषण की ओर।

Note!→ मूर्त - जो वस्तुएँ दिखाई देती हैं। जैसे→ पौधे - जीव etc
अमूर्त - जो वस्तुएँ दिखाई नहीं देती। जैसे→ बुद्धि।

3) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त !→ भिन्न-भिन्न भाषा परिवेश परिस्थिति से आए बच्चे भी अपनी भिन्नता के बावजूद पढ़ सकें, यह सिद्धान्त इस बात पर बल देता है।

6-4-2022

Chapter-2

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त

- शिक्षण सामग्री का प्रयोग - सदुपयोग करने के लिए कुछ शिक्षण सूत्र-सिद्धान्त आदि का पालन करना पड़ता है। ये सूत्र, सिद्धान्त उसके शिक्षण की खाद होते हैं इसी के बल पर वह अपने शिक्षण को समृद्ध बनाता है।
जो कि निम्नलिखित हैं।→

1) नियोजन का सिद्धान्त।→ यह एक प्रकार से पूर्व पाठिका है। जैसे कार्य है कक्षा में जाने से पूर्व पाठ की तैयारी।

2) शिक्षण सूत्र के क्रियान्वन का सिद्धान्त।→ शिक्षक का दूसरा कार्य है कि व शिक्षण सूत्र के क्रियान्वन के सिद्धान्त को अपनाएं।

* शिक्षण के सूत्र।→ (नियम)
- सरल से कठिन की ओर
- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- मूर्त से अमूर्त की ओर
- विशिष्ट से सामान्य की ओर
- अनिश्चित से निश्चित की ओर
- पूर्ण से अंश की ओर
- आगमन से निगमन की ओर। (उदाहरण से नियम की ओर)
- विश्लेषण से संश्लेषण की ओर।

Note।→ मूर्त - जो वस्तुएँ दिखाई देती हैं। जैसे → पौधे - जीव etc
अमूर्त - जो वस्तुएँ दिखाई नहीं देती। जैसे → बुद्धि।

3) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त।→ भिन्न-भिन्न भाषा परिवेश परिस्थिति से आए बच्चे भी अपनी भिन्नता के बावजूद पढ़ सकें, यह सिद्धान्त इस बात पर बल देता है।

10) परिपक्वता का सिद्धान्त ।→ शिक्षक अपने कार्य में परिपक्व हो, उसके तकनीक मजबूत हो, वह सही होते, प्रभावशाली होते।

← प्रश्नावली →

1) भाषा शिक्षण के सूत्र । सिद्धान्त ----?
शिक्षण को स्पष्ट करते हैं।
2) नियोजन का सिद्धान्त कहलाता है कि ----?
अपनी शिक्षण प्रक्रिया का नियोजन करो।
3) कौन - सा शिक्षण सूत्र पूर्व प्राथमिक स्तर के अनुकूल नहीं है?
अमूर्त से मूर्त की ओर।
4) भाषा की यात्रा नहीं होती ---?
कठिन से सरल की ओर।
5) गेस्टाल्टवाद का सिद्धान्त संकेत करता है?
पूर्ण से अंश की ओर
↳ जनक - मैक्स वर्दीमर

10) परिपक्वता का सिद्धान्त ।→ शिक्षक अपने कार्य में परिपक्व हो, उसके तार्किक- भरपूर हो, वह सही बोले, प्रभावशाली बोले।

← प्रश्नावली →

1) भाषा शिक्षण के सूत्र / सिद्धान्त ----?
शिक्षण को समृद्ध करते हैं।

2) नियोजन का सिद्धान्त कहलाता है कि ---?
अपनी शिक्षण प्रक्रिया का नियोजन करो।

3) कौन - सा शिक्षण सूत्र पूर्व प्राथमिक स्तर के अनुकूल नहीं है?
अमूर्त से मूर्त की ओर।

4) भाषा की यात्रा नहीं होती ---?
कठिन से सरल की ओर।

5) गेस्टाल्टवाद का सिद्धान्त संकेत करता है?
पूर्ण से अंश की ओर
→ जनक - मैक्स वर्दीमर

11-4-2020

Chapter-3

[भाषा के कार्य] Part-1

- भाषा के कौशल :→ सुबोपालि
  ↳ सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना।

* भाषा के 5 आधारभूत कौशल हैं सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना व चिन्तन करना, पाँच आधारभूत स्तंभो का काम सरल से कठिन के क्रम में है।

* प्रत्येक व्यक्ति अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार चिन्तन करता है। भाषा हमारी इसी बौद्धिक क्षमता की अभिवृत्ति है।

भाषा के प्रकार

अनौपचारिक भाषा
(i) माता-पिता
(ii) घर-परिवार
(iii) परिवेश
(iv) पड़ोस
(v) समाज
(vi) जनसंचार माध्यम

औपचारिक भाषा
ये विद्यालय तथा पढ़े-लिखे समाज द्वारा प्राप्त होती है।

* राजभाषा → सरकारी कामकाज के लिए प्रयुक्त भाषा को राजभाषा कहते हैं।
  → हिन्दी या अंग्रेजी प्रयोग होती है।
  → ये अध्याय-7 व अनुच्छेद 343 में है।

P.T.O.

Chapter-3

Pradeep 13-4-2020

भाषा विकास में बोलने व सुनने की भूमिका

Part-2

* श्रवण क्षमता / कौशल के विकास की शिक्षण विधि :→ अनेक विधियों के द्वारा बालकों के श्रवणकौशल को सुधार सकते हैं। कुछ निम्न हैं:→

(i) कक्षा शिक्षण
(ii) पाठ्यसहगामी क्रियाएँ एवं गतिविधियाँ
(iii) कक्षेत्तर गतिविधियाँ

(i) कक्षा शिक्षण :→

- शिक्षक द्वारा आदेश- निर्देश। (प्रश्न पूछना आदि)
- बालगीत, काव्य पंक्तियाँ पढ़ना।
- कहानी सुनाना। (प्रश्न पूछना)
- प्रशंसा अभिव्यक्ति। (प्रशंसा करना)

(ii) पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एवं गतिविधियाँ :→ कक्षा में या पाठशाला के मंच पर कविता वाचन प्रतियोगिता, आशुभाषण, वाद-विवाद, समाचार वाचन के द्वारा श्रवण कौशल में सुधार लाया जा सकता है।

(iii) कक्षेत्तर गतिविधियाँ :→ कक्षा में अलग होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेकर बच्चा सजग और सचेत रहता है। इन गतिविधियों द्वारा मन व मस्तिष्क क्रियाशील हो जाते हैं और श्रवण शक्ति में सुधार होता है।

Note:→ शिक्षण - किताबों की सहायता से कक्षा में किया गया कार्य।
सहशिक्षण - बिना किताबों के किया गया कार्य - आशुभाषण, वाद-विवाद आदि।

Pradeep
PAGE No.
DATE / /

* श्रवण दोष :→
(i) वंशानुगत के कारण हो सकता है।
(ii) पारिवारिक अशांति भी श्रवण दोष पैदा करती है।
(iii) चोट लगना, दुर्घटना भी कारण हो सकती है।
(iv) संकुलित भोपन न मिलना।
(v) अंतर्मुखी होगा। (अपने आप में ही रहना)
(vi) आत्यधिक मानसिक अंतर्द्वंद के चलते बालक बाह्य भाषा को नहीं सुन पाता।

* बोलने (मौखिक) का कौशल :→
सुनना व बोलना परिवार से सीखे गए कौशल माने जाते हैं। इनको पाठशाला श्रेष्ठ बनाती है।
भाषा के दो रूप हैं → मौखिक, लिखित

- मौखिक व्यवहार में वक्ता के साथ-साथ श्रोता का होना भी आवश्यक है।
- मौखिक कौशल को प्रभावी बनाने वाले कारक :→
  (i) शुद्ध उच्चारण।
  (ii) विचारों की क्रमबद्धता।
  (iii) उचित अनुपात बलाघात और गति।
- मौखिक दोष :→
  (i) वंशानुगत के कारण।
  (ii) पारिवारिक अशांति।
  (iii) चोट लगना, दुर्घटना।

Note :→ दो साल के बालक तार वाली भाषा (टेलीग्राफिक स्पीच) का प्रयोग करते हैं। → (2 शब्दों वाली अभि

Pradeep 18-4-2020

Chapter-4

भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका

* व्याकरण :→

व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा भाषा को शुद्ध पढ़ना व लिखना सीखते हैं, व्याकरण भाषा की अनुगामिनी है। पतंजलि ने कहा था -

"व्याकरण शब्दानुशासन है।"

- पहले भाषा का विकास होता है तब उसका व्याकरण बनता है।
- भाषा शिक्षण में व्याकरण जानना अनिवार्य है।
- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्णों के प्रयोग से ही शब्द, शब्द से पद, पदों से वाक्यांश तथा वाक्यांशों से वाक्य बनता है।

* व्याकरण के तीन रूप हैं :→

(1) औपचारिक व्याकरण :→ इसमें व्याकरण की पुस्तक से, व्याकरण के भेद, अभेद आदि का ज्ञान कराया जाता है।
↳ (Formal)

(2) अनौपचारिक / व्यवहारिक व्याकरण :→ इसमें बालक अनुकरण से सीखते हैं। जिनमें का मत है कि व्याकरण का शिक्षण व्यावहारिक होना चाहिए।

लार्ड मैकाले, मनुष्य उसी भाषा का पूर्ण पंडित होता है जिसे उसने पहले सीखा हो तथा उसका व्याकरण उसके बाद सीखा हो।

(3) प्रासंगिक व्याकरण :→ भाषा के गद्य की पुस्तक पढ़ते समय उसके उदा॰ की सहायता से व्याकरण के नियम निकाले जाते हैं व्याकरण की शिक्षा अलग क्लास में ना देकर भाषा के गद्य की क्लास में ही दी जाती है।

(५) संसर्ग विधि :→ इस विधि को पञ्चकार कहते हैं। इस विधि में व्याकरण के expert को लाकर बालकों से उसकी बातचीत करते हैं।

(६) सह्योग विधि :→ काव्य पाठ व पाठ्यपुस्तक के साथ, को पढ़ते-पढ़ते ही व्याकरण के नियमों का परिचय देना।

(७) विश्लेषणात्मक विधि :→ यह आगमन विधि की तरह ही है इसमें भी उदा० देकर व्याकरण को समझाते हैं।

(८) प्रयोग विधि :→ इसमें उदाहरण प्रस्तुत करके अभ्यास कार्य कराया जाता है।

(९) व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि :→ इसमें रोचक व आकर्षक विधि का प्रयोग करते हुए शब्द, लिंग, क्रिया आदि का प्रयास करते हैं।

Pradeep
PAGE No.
DATE

← प्रश्नावली →

1) उच्च प्राथमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण की उपयुक्त प्रणाली
पाठ्यपुस्तक प्रणाली

2) व्याकरण शिक्षण पाठ के प्रकार होते हैं?
औपचारिक, अनौपचारिक, प्रासंगिक व्याकरण पाठ।

3) "व्याकरण भाषा का व्यवहारिक विश्लेषण है।" यह परिभाषा दी की?
डॉ. स्वीट

4) लेखन व उच्चारण के लिए अनुकरण विधि उपयोगी है।
प्रारंभिक स्तर पर

5) व्याकरण - अनुवाद विधि को किस नाम से जाना जाता है?
अप्रत्यक्ष विधि

6) किस विधि में व्याकरण का सैद्धांतिक ज्ञान न देकर व्यवहारिक पक्ष पर बल देते हैं?
भाषा संसर्ग विधि

7) व्याकरण की समझ को संदर्भपरक प्रश्नों के माध्यम से आँकना
पूर्णतः उचित है।

14-4-20

Chapter-5

Part-1

भाषा विविधता वाले कक्षा-कक्ष की समस्याएँ

* उत्सुकता, नवीनता, ध्यान और प्रेरणा ये चारों कक्षा-शिक्षण के चार मजबूत आधार स्तंभ माने जाते हैं।

"शिक्षण का अर्थ बच्चों को पढ़ाना ही नहीं बल्कि उन तक पहुँचाना है।"

* अध्यापक बनना और अध्यापक होना दो भिन्न तथ्य हैं, अध्यापक बनने के लिए एक डिग्री की आवश्यकता होती है। किन्तु एक अध्यापक होने के लिए सतत अध्ययन की अनिवार्यता होती है।

* शिक्षण में आने वाली समस्याएँ :→

शिक्षण एक त्रिकोणीय प्रक्रिया है जिसके तीन कोण हैं :→ शिक्षक, शिक्षण, शिक्षार्थी

शिक्षक विभिन्न प्रवृत्तियों / तकनीकों का प्रयोग करके अपने शिक्षण को बहुआयामी बनाता है। शिक्षण स्तर में सामान्यतः तीन स्तर पर समस्याएँ होती हैं→

1) शिक्षक के स्तर पर
2) शिक्षण के स्तर पर
3) शिक्षार्थियों के स्तर पर

1) शिक्षक के स्तर पर :→

शिक्षक दो कारकों से प्रभावित होकर शिक्षण के क्षेत्र में आते हैं- संयोग से या अपनी इच्छा से।

- शिक्षक पूर्ण रूप से प्रशिक्षित ना हो। → जैसे बंगाल का बंगाली बोलना
- शिक्षक के ऊपर अपनी मातृभाषा का अत्यधिक प्रभाव हो।
- शिक्षक मानसिक दबाव की परिस्थितियों में उलझे हो।
- विषय का समुचित ज्ञान ना हो।
- शिक्षण प्रक्रिया से जुड़े तथ्यों का पालन नहीं कर रहा हो।

(2) शिक्षण के स्तर पर।→

शिक्षक को भाषा शिक्षण में विद्यालय से साधन-सहयोग ना मिल रहे हो जैसे।→

- संसाधनों की कमी हो, जैसे शिक्षण की आवश्यकतानुसार श्याम[illegible] चौक, प्रोजेक्टर आदि ना हो।
- कक्षा में प्रकाश, पंखे आदि की उचित व्यवस्था ना हो।
- कक्षा में छात्रों की संख्या अनुपात से अधिक हो। (30:1) से अधिक
- ऐसी पाठ्य सामग्री हो जो रुचिपूर्ण ना हो।
- सही मूल्यांकन ना कर पाना।
- मूल्यांकन के पश्चात त्रुटियों की पहचान ना करना।

(3) शिक्षार्थियों के स्तर पर।→

- कक्षा में बहुभाषी बच्चों का होना।
- बच्चों के पास पाठ्यपुस्तक एवं सहायक सामग्री का ना होना।
- पारिवारिक वातावरण का भाषा शिक्षण के अनुकूल ना होना।
- भाषायी कौशल में पठन-लेखन ठीक ना होना।
- शारीरिक कष्ट होना।

Pradeep
PAGE No:
DATE: / /

← प्रश्नावली →

1) कक्षा - कक्ष शिक्षण का आधारभूत तत्व है?
उत्सुकता

2) शिक्षक का कर्तव्य बच्चों को पढ़ाना ही नहीं बल्कि →
उन तक पहुँचाना भी है।

3) शिक्षक को अपने ज्ञान उत्क्रमण हेतु करना चाहिए?
विषयेत्तर अध्ययन

4) शिक्षण नहीं चल सकता _____ के बिना?
विद्यार्थी

5) शिक्षण बेहतर नहीं हो सकता यदि शिक्षक?
प्रशिक्षित नहीं हो।

6) एक सहायक शिक्षण सामग्री यह भी है?
भ्रमण

7) शिक्षक अपनी विषयगत समस्याएँ सुलझा सकता है?
शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम से।

8) बच्चों के अंक कम आए हैं तो अध्यापक उपचारात्मक सूची में क्या लिखेगा?
पुनरीक्षण करें।

Pradeep
PAGE No.
DATE / /

5) ए॰डी॰एच॰डी॰ (A.D.H.D) :→

A.D.H.D अर्थात् एकाग्रता में कमी वाले बालक एकाग्रता में कमी होने के कारण ठीक से पढ़-लिख नहीं पाते। (इसमें बालकों को पहले पूरी बात करने को कहें।)

6) डिस्प्रैक्सिया (Dyspraxia) :→

मांसपेशियों पर नियंत्रण ना होने के कारण ये बालक हिलने-डुलने एवं समायोजन में भाषा सीखने और बोलने में कठिनाइयाँ महसूस करते हैं।

(7) अफेजिया (Aphasia) :→

इस प्रकार से पीड़ित बच्चे ठीक प्रकार से सुन नहीं पाते और निर्देशों का पालन नहीं कर पाते हैं।

← प्रश्नावली →

1) पढ़ने में आने वाली समस्या का नाम है-?
डिस्लेक्सिया
2) मांसपेशियों पर नियंत्रण ना होना कहलाता है?
डिस्प्रैक्सिया
3) निदान और उपचार के समय शिक्षक का रवैया?
सकारात्मक
4) कार्य के क्रम में अंतिम होगा?
कक्षा कार्य-गृहकार्य की बारीक जाँच

2) मौखिक अभिव्यक्ति कौशल !→ (बोलना)
अपने भावों और विचारों को प्रभा
ढंग से, सार्थक शब्दों में बोलकर व्यक्त करने को मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं।

* मौखिक अभिव्यक्ति के निम्न 5 पक्ष होते हैं :→

(1) शुद्ध उच्चारण।
(2) निस्संकोच भावाभिव्यक्ति।
(3) उचित गति, बलाघात तथा अनुतान।
(4) उचित हाव-भाव।
(5) विचारों में क्रमबद्धता।

* मौखिक अभिव्यक्ति के दो रूप हैं !→
(i) अनौपचारिक (Informal)
(ii) औपचारिक (Formal)

- औपचारिक मौखिक अभिव्यक्ति को दो उप भागों में बांटा गया है।
(1) साहित्यिक (2) व्यवहारिक
- परस्पर बातचीत (वार्तालाप) सुनने व बोलने के कौशलों के विकास में सहायक है।

3) पठन कौशल !→ (पढ़ना)
- हम जितना अधिक पढ़ते हैं उतना ही अधिक समझने की शक्ति बढ़ती है।
- यह कौशल के रूप में प्रारंभ होता है और योग्यता के रूप में इसकी परिणति होती है।
- पठन कौशल भी है और योग्यता भी है।
- पठन – लिपि प्रतीकों को पहचानना, उच्चारण कुशलता, अर्थग्रहण एवं आशय समझ की योग्यता का समावेश है।
- पाठ के पठन के स्तर होते हैं – पाठ की पंक्तियों का वाचन करना, पंक्तियों की गहराई से पढ़ना, पाठ की पंक्तियों में निहित आशय को पकड़ना।

• बच्चों की पठन कुशलता का विकास करने में विभिन्न संदर्भों से जुड़ी सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

* संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण करना पठन कौशल में ज्यादा महत्वपूर्ण है।

* पठन कौशल के प्रकार :→
  1) सस्वर पठन
  2) मौन पठन

1) सस्वर पठन :→

स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर पठन कहा जाता है। इसमें शब्दों का उच्चारण, वाक्यों का शब्द समूहों में विभाजन, अनुतान, विरामचिन्ह, प्रवाह आदि महत्वपूर्ण हैं। यह मौखिक अभिव्यक्ति के निकट है।

* सस्वर पठन के दो भाग → (i) वैयक्तिक पठन
  (ii) सामूहिक पठन

2) मौन पठन :→

लिखित सामग्री को चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन पठन कहलाता है। मौन पठन में स्वरहीनता, पठन गति तथा अर्थग्रहण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मौन पठन में अर्थग्रहण पर बल होता है। इसलिए वह ज्ञानार्जन का मुख्य आधार है।

Note:→ मौन पाठन ज्ञानार्जन का मुख्य आधार है।

* मौन पाठन के भेद → (i) गम्भीर पठन (भाषा पर अधिकार करना)
  (ii) द्रुत पठन (भाषा का अभ्यास करना)

* पठन कौशल की असमर्थताएँ :→
  • दृष्टि सम्बन्धी (दोष दृष्टि वाले बालक)
  • श्रवण और वाक् (ऊंचा सुनने के कारण, शब्द को ठीक पहचान)
  • मानसिक रूप (चिन्हों की भूलना, अशुद्ध उच्चारण)

P.T.O.

3600+
महत्वपूर्ण प्रश्न
SELLIN
UPTET E
BOO

Pradeep
PAGE No.:
DATE: / /

4.) लेखन कौशल :→

- ब्राह्मी लिपि से हिन्दी का जन्म हुआ है।
- लिखना भी एक तरह की बातचीत है।
- देवनागरी लिपि के लेखन के लिए चार रेखाओं वाली अभ्यास पुस्तिका का प्रयोग किया जा सकता है।
- लेखन कला का विकास अभ्यास से होता है।

सुलेख - सुन्दर लेख का सुलेख कहते हैं।

अनुलेख - अनुलेख से अभिप्राय है श्यामपट्ट अथवा पुस्तक की सामग्री को ज्यों का त्यों देखकर लेख लिखना। इसका मुख्य उद्देश्य शुद्ध वर्तनी सहित लेखन का अभ्यास करना

श्रुतलेख - सुनकर लिखे गए लेख को श्रुतलेख कहते हैं।

← प्रश्नावली →

1) 'आशु-भाषण प्रतियोगिता' किस कौशल के विकास में सहायक है
श्रवण कौशल

2) बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सबसे कम प्रभावी तरीका कौन-सा है?
व्याकरण - आधारित संरचना - अभ्यास

3) उच्चारण कौशल की परीक्षा किससे ली जा सकती है?
मौखिक परीक्षा

4) परस्पर बातचीत मुख्यतः →
सुनने व बोलने के कौशलों के विकास में सहायक है।

5) बोलना कौशल के विकास के लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है?
परस्पर वार्तालाप

6) मौखिक भाषा के आकलन का सर्वोत्तम तरीका है?
अनुभव बांटना व बातचीत करना।
7) बोलना कौशल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
शुद्ध उच्चारण।
8) किसका संबंध बोलने के कौशल के विकास से नहीं है?
प्रतिलिपि।
9) भाषा शिक्षण में बालकों में मौखिक कौशल के विकास के लिए ___ सबसे कम महत्वपूर्ण है?
प्रश्नों के उत्तर ढूंढना।
10) पढ़ने का प्रारंभ?
अर्थपूर्ण सामग्री से होना चाहिए।
11) सुभाष पढ़ते समय कठिनाई का अनुभव करता है वह ___ से ग्रस्त है?
डिस्लेक्सिया
12) मोहन लिखते समय अनेक बार कठिनाइयों का सामना करता है उसकी समस्या मुख्यतः ___ से संबंधित है?
डिसग्राफिया

* मूल्यांकन का भाषा शिक्षण में महत्व ! →

- मूल्यांकन एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है इसके अंतर्गत ... वस्तु की उपयोगिता का निर्णय किया जाता है।
- शिक्षण को उद्देश्य केंद्रित करना ही मूल्यांकन का ...
- मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों की बुद्धि लब्धि का मूल्यांकन कर सकता है।
- मूल्यांकन व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करने वाली एक सुव्यवस्थित प्रणाली है।
- मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है इसमें छात्र की योग्यता, ज्ञान, कौशल तथा उनकी सीमाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

क्वीन के अनुसार,

शिक्षा में मूल्यांकन एक नवीन अवधारणा है इसका प्रयोग विद्यालय में कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, छात्र तथा शिक्षक की जाँच के लिए किया जाता है।

- भाषा - कौशल का मूल्यांकन ! →

(1) श्रवण कौशल का मूल्यांकन ! → साहित्य का शिक्षण करते समय अध्यापक विषय वस्तु की जाँच छात्रों के सामने करता है। छात्रों ने विषयवस्तु को ग्रहण किया है या नहीं इसके लिए पाठ का सार पूछ कर विषय वस्तु से संबंधित प्रश्न पूछ कर छात्रों के श्रवण कौशल की परख इत्यादि के द्वारा श्रवण कौशल को मूल्यांकन किया जाता ...

(2) मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का मूल्यांकन ! →

- छात्रों द्वारा अपने भावों विचारों तथा अर्जित अनुभवों का मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना। भाषा शिक्षण की विभिन्न विधाओं के शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास किस स्तर तक हुआ है।

इसकी जाँच मौखिक परीक्षा एवं प्रयोगिक परीक्षा के द्वारा भी जा सकती है। विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम जैसे की भाषण, कविता-पाठ, वाद-विवाद, प्रतियोगिता करवाकर उनके मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की जांच की जा सकती है।

(3) पठन कौशल का मूल्यांकन :→

पठन कौशल के मूल्यांकन के अंतर्गत विद्यार्थी को पढ़कर समझने अर्थात अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है। साथ ही विद्यार्थी द्वारा यति, गति, विराम चिन्ह इत्यादि को ध्यान में रखते हुए धारा प्रवाह पढ़ने की क्षमता का मूल्यांकन भी किया जाता है। इस कौशल का मूल्यांकन कविता, कथनी का पाठ करवाकर, गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का हल करवाकर इत्यादि के द्वारा किया जा सकता है।

(4) लेखन कौशल का मूल्यांकन :→

लेखन कौशल के मूल्यांकन में अध्यापक विद्यार्थियों की लेखन क्षमताओं का आंकलन करता है। अध्यापक यह आकलन करता है कि विद्यार्थी लिखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम हुए हैं अथवा नहीं। साथ ही वह उनके लेखन में वर्तनी, विराम चिन्ह इत्यादि से संबंधित दोष का भी मूल्यांकन करता है। निबंध-लेख, अनुच्छेद, लेख-सुलेख इत्यादि के द्वारा लेखन कुशलता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

- मूल्यांकन की विधियाँ :→

परीक्षा
- (i) लिखित परीक्षा (लघु, निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ)
- (ii) मौखिक परीक्षा
- (iii) प्रायोगिक परीक्षा

13) भाषा के सतत व व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य है?
दैनिक जीवन में हिन्दी में समझ तथा बोलने की क्षमता का विकास करना।

14) सतत मूल्यांकन का एक निहितार्थ है?
बच्चों के भाषा-प्रयोग का निरंतर अवलोकन करना।

15) समग्र और सतत मूल्यांकन?
से दो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास संभव हैं।